ایاتها ٦٠ | ٣٠ سُوۡرَةُ الرُّوۡمِ مَکِّیَّۃٌ ٨٤ | رکوعاتها ٦

सूरए रूम मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۲﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ

रूमी[2] मग़्लूब हुए पास की ज़मीन में[3] और अपनी मग़्लूबी के बा'द

سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَ مِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَ

अ़न्क़रीब ग़ालिब होंगे[4] चन्द बरस में[5] हुक्म अल्लाह ही का है आगे और पीछे[6] और

یَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۴﴾ بِنَصۡرِ اللّٰہِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ ہُوَ

उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे अल्लाह की मदद से[7] वोह मदद करता है जिस की चाहे और वोही है

का ठिकाना जहन्नम ही है **168 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे। ह़ज़रते जुनैद ने फ़रमाया : जो तौबा में कोशिश करेंगे उन्हें इख़्लास की राह देंगे। ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ ने फ़रमाया : जो त़लबे इल्म में कोशिश करेंगे उन्हें अ़मल की राह देंगे। ह़ज़रते सा'द बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया : जो इक़ामते सुन्नत में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे। **169 :** उन की मदद और नुसरत फ़रमाता है। **1 :** सूरए रूम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, साठ आयतें, आठ सो उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पांच सो चोंतीस ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** फ़ारस और रूम के दरमियान जंग थी और चूंकि अहले फ़ारस मजूसी थे इस लिये मुश्रिकीने अ़रब उन का ग़लबा पसन्द करते थे, रूमी अहले किताब थे इस लिये मुसल्मानों को इन का ग़लबा अच्छा मा'लूम होता था। ख़ुस्रव परवेज़ बादशाहे फ़ारस ने रूमियों पर लश्कर भेजा और क़ैसरे रूम ने भी लश्कर भेजा, येह लश्कर सर ज़मीने शाम के क़रीब मुक़ाबिल हुए, अहले फ़ारस ग़ालिब हुए, मुसल्मानों को येह ख़बर गिरां गुज़री, कुफ़्फ़ारे मक्का इस से ख़ुश हो कर मुसल्मानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और नसारा भी अहले किताब और हम भी उम्मी और अहले फ़ारस भी उम्मी हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे भाइयों रूमियों पर ग़ालिब हुए हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं और इन में ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएंगे। येह आयतें सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कुफ़्फ़ारे मक्का में जा कर ए'लान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम रूमी ज़रूर अहले फ़ारस पर ग़लबा पाएंगे, ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से ख़ुश मत हो, हमें हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने ख़बर दी है। उबय्य बिन ख़लफ़ काफ़िर आप के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और आप के उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त़ हो गई अगर नव साल में अहले फ़ारस ग़ालिब आ जाएं तो ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उबय्य को सो ऊंट देंगे और अगर रूमी ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को सो ऊंट देगा, उस वक़्त तक क़िमार की हुरमत नाज़िल न हुई थी। **मस्अला :** और ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा व इमाम मुह़म्मद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا के नज़्दीक ह़र्बी कुफ़्फ़ार के साथ उ़क़ूदे फ़ासिदा रिबा वग़ैरा जाइज़ हैं और येही वाक़िआ़ इन की दलील है। अल क़िस्सा सात साल के बा'द इस ख़बर का सिद्क़ ज़ाहिर हुवा और जंगे हुदैबिया या बद्र के दिन रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आए और रूमियों ने मदाइन में अपने घोड़े बांधे और इराक़ में रूमिया नामी एक शह्र की बिना रखी और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने शर्त़ के ऊंट उबय्य की औलाद से वुसूल कर लिये क्यूं कि वोह इस दरमियान में मर चुका था। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को हुक्म दिया कि शर्त़ के माल को सदक़ा कर दें। येह ग़ैबी ख़बर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। (خازن ومدارک) **3 :** या'नी शाम की उस सर ज़मीन में जो फ़ारस के क़रीब तर है। **4 :** अहले फ़ारस पर **5 :** जिन की ह़द नव बरस है। **6 :** या'नी रूमियों के ग़लबे से पहले भी और उस के बा'द भी। मुराद येह है कि पहले अहले फ़ारस का ग़ालिब होना और दोबारा अहले रूम का येह सब अल्लाह के अम्र व इरादे और उस के क़ज़ा व क़दर से है। **7 :** कि उस ने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर ग़लबा दिया और उसी रोज़ बद्र में मुसल्मानों को मुश्रिकों पर और मुसल्मानों का सिद्क़ और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم और क़ुरआने करीम की ख़बर की तस्दीक़ ज़ाहिर फ़रमाई।

www.dawateislami.net

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٥ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान अल्लाह का वा'दा[8] अल्लाह अपना वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖۚ وَهُمْ

लोग नहीं जानते[9] जानते हैं आंखों के सामने की दुन्यवी ज़िन्दगी[10] और वोह

عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٧ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ؕ مَا خَلَقَ

आख़िरत से पूरे बे ख़बर हैं क्या उन्हों ने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने

اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ

पैदा न किये आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है मगर हक़[11] और एक मुक़र्रर मीआ़द से[12] और

اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝٨ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي

बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार रखते हैं[13] और क्या उन्हों ने ज़मीन में

الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते कि उन से अगलों का अन्जाम कैसा हुवा[14] वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ

ज़ियादा ज़ोर आवर थे और ज़मीन जोती और आबाद की उन[15] की आबादी से ज़ियादा और

جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

उन के रसूल उन के पास रोशन निशानियां लाए[16] तो अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करता[17] हां वोह

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٩ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓآٰى

ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे[18] फिर जिन्हों ने ह़द भर की बुराई की उन का अन्जाम येह हुवा

8 : जो उस ने फ़रमाया था कि रूमी चन्द बरस में फिर ग़ालिब होंगे। **9 :** या'नी बे इ़ल्म हैं। **10 :** तिजारत ज़िराअ़त ता'मीर वग़ैरा दुन्यवी धन्दे। इस में इशारा है कि दुन्या की भी ह़क़ीक़त नहीं जानते इस का भी ज़ाहिर ही जानते हैं। **11 :** या'नी आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है अल्लाह तआ़ला ने इन को अ़बस और बातिल नहीं बनाया, इन की पैदाइश में बे शुमार ह़िक्मतें हैं। **12 :** या'नी हमेशा के लिये नहीं बनाया बल्कि एक मुद्दत मुअ़य्यन कर दी है जब वोह मुद्दत पूरी हो जावेगी तो येह फ़ना हो जाएंगे और वोह मुद्दत क़ियामत क़ाइम होने का वक़्त है। **13 :** या'नी बअ़्से बा'दल मौत पर ईमान नहीं लाते। **14 :** कि रसूलों की तक्ज़ीब के बाइ़स हलाक किये गए, उन के उजड़े हुए दियार और उन की बरबादी के आसार देखने वालों के लिये मूजिबे इ़ब्रत हैं। **15 :** अहले मक्का **16 :** तो वोह उन पर ईमान न लाए। पस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया। **17 :** उन के हुक़ूक़ कम कर के और उन्हें बिग़ैर जुर्म के हलाक कर के। **18 :** रसूलों की तक्ज़ीब कर के अपने आप को मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब बना कर।

www.dawateislami.net

اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ

कि **अल्लाह** की आयतें झुटलाने लगे और उन के साथ तमस्ख़ुर करते **अल्लाह** पहले बनाता है

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ

फिर दोबारा बनाएगा[19] फिर उस की त़रफ़ फिरोगे[20] और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी मुजरिमों की

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ

आस टूट जाएगी[21] और उन के शरीक[22] उन के सिफ़ारिशी न होंगे और वोह अपने शरीकों से

كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا

मुन्किर हो जाएंगे और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे[23] तो वोह

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَاَمَّا

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ की क्यारी में उन की ख़ात़िर दारी होगी[24] और वोह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुटलाया[25] वोह अ़ज़ाब में ला धरे (डाले)

مُحْضَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَلَهُ

जाएंगे[26] तो **अल्लाह** की पाकी बोलो[27] जब शाम करो[28] और जब सुब्ह़ हो[29] और उसी की

الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ يُخْرِجُ

ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में[30] और कुछ दिन रहे[31] और जब तुम्हें दोपहर हो[32] वोह ज़िन्दा को

19 : या'नी बा'दे मौत ज़िन्दा कर के। **20 :** तो आ'माल की जज़ा देगा। **21 :** और किसी नफ़्अ़ और भलाई की उम्मीद बाक़ी न रहेगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि उन का कलाम मुन्क़त़अ़ हो जाएगा वोह साकित रह जाएंगे क्यूं कि उन के पास पेश करने के क़ाबिल कोई हुज्जत न होगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि वोह रुस्वा होंगे **22 :** या'नी बुत जिन्हें वोह पूजते थे **23 :** मोमिन और काफ़िर फिर कभी जम्अ़ न होंगे। **24 :** या'नी बुस्ताने जन्नत में उन का इक्राम किया जाएगा जिस से वोह ख़ुश होंगे, येह ख़ात़िर दारी जन्नती ने'मतों के साथ होगी। एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद समाअ़ है कि उन्हें नग़माते त़रब अंगेज़ सुनाए जाएंगे जो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की तस्बीह़ पर मुश्तमिल होंगे। **25 :** बअ़्स व ह़श्र के मुन्किर हुए। **26 :** न उस अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो न उस से कभी निकलें। **27 :** पाकी बोलने से या तो **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ व सना मुराद है और इस की अह़ादीस में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इस से नमाज़ मुराद है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से दरयाफ़्त क्या गया कि क्या पन्जगाना नमाज़ों का बयान क़ुरआने पाक में है? फ़रमाया : हां और येह आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और इन के अवक़ात मज़्कूर हैं। **28 :** इस में मग़रिब व इशा की नमाज़ें आ गईं। **29 :** येह नमाज़े फ़ज्र हुई। **30 :** या'नी आस्मान और ज़मीन वालों पर उस की ह़म्द लाज़िम है। **31 :** या'नी तस्बीह़ करो कुछ दिन रहे, येह नमाज़े अ़स्र हुई। **32 :** येह नमाज़े ज़ोहर हुई। **हिक्मत :** नमाज़ के लिये येह पन्जगाना अवक़ात मुक़र्रर फ़रमाए गए इस लिये कि अफ़्ज़ले आ'माल वोह है जो मुदाम हो और इन्सान येह क़ुदरत नहीं रखता कि अपने तमाम अवक़ात नमाज़ में सर्फ़ करे क्यूं कि इस के साथ खाने पीने वग़ैरा के ह़वाइज व ज़रूरिय्यात हैं तो **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दे पर इबादत में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाई और दिन के अव्वल व औसत़ व

www.dawateislami.net

الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَیُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ وَیُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ

निकालता है मुर्दे से[33] और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से[34] और ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज़ो शादाब करता) है उस के

مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ع ٢ ٥

मरे पीछे[35] और यूं ही तुम निकाले जाओगे[36] और उस की निशानियों से है येह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[37]

ثُمَّ اِذَاۤ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

फिर जभी तुम इन्सान हो दुन्या में फैले हुए और उस की निशानियों से है कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से

اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَیْهَا وَجَعَلَ بَیْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

जोड़े बनाए कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महब्बत और रहमत रखी[38] बेशक इस में

لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिये और उस की निशानियों से है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश

وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْعٰلِمِیْنَ ﴿۲۲﴾ وَ

और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़[39] बेशक इस में निशानियां हैं जानने वालों के लिये और

مِنْ اٰیٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ

उस की निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना[40] और उस का फ़ज़्ल तलाश करना[41] बेशक इस

ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ

में निशानियां हैं सुनने वालों के लिये[42] और उस की निशानियों से है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डराती[43] और

طَمَعًا وَّیُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَیُحْیٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ

उम्मीद दिलाती[44] और आस्मान से पानी उतारता है तो उस से ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के मरे पीछे बेशक

आख़िर में और रात के अव्वल व आख़िर में नमाज़ें मुक़र्रर कीं ताकि इन अवक़ात में मश्ग़ूले नमाज़ रहना दाइमी इबादत के हुक्म में हो। (مدارک وخازن) **33 :** जैसे कि परिन्द को अन्डे से और इन्सान को नुत्फ़े से और मोमिन को काफ़िर से। **34 :** जैसे कि अन्डे को परिन्द से, नुत्फ़े को इन्सान से, काफ़िर को मोमिन से **35 :** या'नी ख़ुश्क हो जाने के बा'द मींह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर। **36 :** क़ब्रों से बअ्स व हिसाब के लिये। **37 :** तुम्हारा जद्दे आ'ला और तुम्हारी अस्ल हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **38 :** कि बिग़ैर किसी पहली मा'रिफ़त और बिग़ैर किसी क़राबत के एक को दूसरे के साथ महब्बत व हमदर्दी है। **39 :** ज़बानों का इख़्तिलाफ़ तो येह है कि कोई अ़रबी बोलता है कोई अ़जमी, कोई और कुछ, और रंगतों का इख़्तिलाफ़ येह है कि कोई गोरा है कोई काला कोई गन्दुमी और येह इख़्तिलाफ़ निहायत अ़जीब है क्यूं कि सब एक अस्ल से हैं और सब हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام की औलाद हैं। **40 :** जिस से तकान दूर होती है और राहत हासिल होती है। **41 :** फ़ज़्ल तलाश करने से कस्बे मआ़श मुराद है। **42 :** जो गोशे होश से सुनें। **43 :** गिरने और नुक़्सान पहुंचाने से **44 :** बारिश की।

www.dawateislami.net

فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ

इस में निशानियां हैं अक़्ल वालों के लिये[45] और उस की निशानियों से है कि उस के हुक्म से आस्मान

الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَاۤ اَنْتُمْ

और ज़मीन क़ाइम हैं[46] फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा[47] जभी तुम

تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ

निकल पड़ोगे[48] और उसी के हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं सब उस के ज़ेरे हुक्म हैं और

هُوَ الَّذِیْ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ وَ هُوَ اَهْوَنُ عَلَیْهِ ؕ وَ لَهُ الْمَثَلُ

वोही है कि अव्वल बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा[49] और येह तुम्हारी समझ में इस पर ज़ियादा आसान होना चाहिये[50] और उसी के लिये है

الْاَعْلٰى فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۷﴾ ع ضَرَبَ ع ۳ ۸ ۲

सब से बरतर शान आस्मानों और ज़मीन में[51] और वोही इ़ज़्ज़तो हिक्मत वाला है तुम्हारे लिये[52] एक

لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ

कहावत बयान फ़रमाता है ख़ुद तुम्हारे अपने ह़ाल से[53] क्या तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ के माल गुलामों में से कुछ शरीक हैं[54]

فِیْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِیْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ

उस में जो हम ने तुम्हें रोज़ी दी[55] तो तुम सब इस में बराबर हो[56] तुम उन से डरो[57] जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो[58]

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا

हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियां बयान फ़रमाते हैं अक़्ल वालों के लिये बल्कि ज़ालिम[59] अपनी ख़्वाहिशों

45 : जो सोचें और क़ुदरते इलाही पर ग़ौर करें। **46 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास और ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने फ़रमाया कि वोह दोनों बिग़ैर किसी सहारे के क़ाइम हैं। **47 :** या'नी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा इस त़रह़ कि ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام क़ब्र वालों के उठाने के लिये सूर फूंकेंगे तो अव्वलीन व आख़िरीन में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे। चुनान्चे इस के बा'द ही इर्शाद फ़रमाता है **: 48 :** या'नी क़ब्रों से ज़िन्दा हो कर। **49 :** हलाक होने के बा'द। **50 :** क्यूं कि इन्सानों का तजरिबा और इन की राय येही बताती है कि शै का इआ़दा (दोबारा बनाना) उस की इब्तिदा से सह्ल (आसान) होता है और **अल्लाह** तआ़ला के लिये कुछ भी दुश्वार नहीं। **51 :** कि उस जैसा कोई नहीं, वोह मा'बूदे बरह़क़ है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **52 :** ऐ मुश्रिको ! **53 :** वोह मसल (कहावत) येह है **54 :** या'नी क्या तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारे साझी हैं **55 :** मालो मताअ़ वग़ैरा **56 :** या'नी आक़ा और ग़ुलाम को उस मालो मताअ़ में यक्सां इस्तिह़्क़ाक़ हो, ऐसा कि **57 :** अपने मालो मताअ़ में बिग़ैर उन ग़ुलामों की इजाज़त के तसर्रुफ़ करने से **58 :** मुद्दआ़ येह है कि तुम किसी त़रह़ अपने मम्लूकों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं कर सकते तो कितना ज़ुल्म है कि **अल्लाह** तआ़ला के मम्लूकों को उस का शरीक क़रार दो। ऐ मुश्रिकीन तुम **अल्लाह** तआ़ला के सिवा जिन्हें अपना मा'बूद क़रार देते हो वोह उस के बन्दे और मम्लूक हैं। **59 :** जिन्हों ने शिर्क कर के अपनी जानों पर ज़ुल्मे अ़ज़ीम किया है।

www.dawateislami.net

اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِیْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ

के पीछे हो लिये बे जाने[60] तो उसे कौन हिदायत करे जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया[61] और उन का कोई

نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ

मददगार नहीं[62] तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इताअ़त के लिये एक अकेले उसी के हो कर[63] अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर

النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ

लोगों को पैदा किया[64] अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना[65] येही सीधा दीन है मगर

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ ۙ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

बहुत लोग नहीं जानते[66] उस की तरफ़ रुजूअ़ लाते हुए[67] और उस से डरो और नमाज़ क़ाइम रखो

وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾ ۙ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا

और मुश्रिकों से न हो उन में से जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया[68] और हो गए

شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ

गुरौह गुरौह हर गुरौह जो उस के पास है उस पर ख़ुश है[69] और जब लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है[70]

دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ

तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ़ रुजूअ़ लाते हुए फिर जब वोह उन्हें अपने पास से रह़मत का मज़ा देता है[71] जभी उन में से

مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ ۙ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ

एक गुरौह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि हमारे दिये की नाशुक्री करें तो बरत लो[72] अब क़रीब

تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ

जानना चाहते हो[73] या हम ने उन पर कोई सनद उतारी[74] कि वोह उन्हें हमारे शरीक

60 : जहालत से **61 :** या'नी कोई उस का हिदायत करने वाला नहीं। **62 :** जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके **63 :** या'नी ख़ुलूस के साथ दीने इलाही पर ब इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल क़ाइम रहो। **64 :** "फ़ित़रत" से मुराद दीने इस्लाम है, मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ल्क़ को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हर बच्चा फ़ित़रत पर पैदा किया जाता है या'नी उसी अ़ह्द पर जो "اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ" फ़रमा कर लिया गया है। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है : फिर उस के मां बाप उस को यहूदी या नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। इस आयत में ह़ुक्म दिया गया कि दीने इलाही पर क़ाइम रहो जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ख़ल्क़ को पैदा किया है। **65 :** या'नी दीने इलाही पर क़ाइम रहना। **66 :** इस की ह़क़ीक़त को तो इस दीन पर क़ाइम रहो। **67 :** या'नी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ तौबा और त़ाअ़त के साथ। **68 :** मा'बूद के बाब में इख़्तिलाफ़ कर के **69 :** और अपने बात़िल को ह़क़ गुमान करता है। **70 :** मरज़ की या क़ह़त़ की या इस के सिवा और कोई **71 :** उस तक्लीफ़ से ख़लासी इनायत करता है और राह़त अ़त़ा फ़रमाता है **72 :** दुन्यवी ने'मतों को चन्द रोज़। **73 :** कि आख़िरत में तुम्हारा क्या ह़ाल होता है और इस दुन्या त़लबी का क्या नतीजा निकलने वाला है। **74 :** कोई ह़ुज्जत या कोई किताब।

www.dawateislami.net

يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَ اِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ

बता रही है[75] और जब हम लोगों को रह़मत का मज़ा देते हैं[76] इस पर ख़ुश हो जाते हैं[77] और अगर उन्हें कोई

سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

बुराई पहुंचे[78] बदला उस का जो उन के हाथों ने भेजा[79] जभी वोह ना उम्मीद हो जाते हैं[80] और क्या उन्हों ने न देखा कि **अल्लाह**

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे बेशक इस में निशानियां हैं

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ

ईमान वालों के लिये तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो[81] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[82] येह

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ٘ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَ مَاۤ

बेहतर है उन के लिये जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हैं[83] और उन्हीं का काम बना और

اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاۡ فِيْۤ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَ مَاۤ

तुम जो चीज़ ज़ियादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें तो वोह **अल्लाह** के यहां न बढ़ेगी[84] और जो

اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ

तुम ख़ैरात दो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हुए[85] तो उन्हीं के दूने हैं[86] **अल्लाह** है

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाए (ज़िन्दा करे)गा[87] क्या

شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا

तुम्हारे शरीकों में[88] भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ करे[89] पाकी और बरतरी है उसे

---

75 : और शिर्क करने का हुक्म देती है, ऐसा नहीं है न कोई हुज्जत है न कोई सनद। **76 :** या'नी तन्दुरुस्ती और वुस्अ़ते रिज़्क़ का **77 :** और इतराते हैं। **78 :** क़ह़त़ या ख़ौफ़ या और कोई बला **79 :** या'नी उन की मा'सियतों और उन के गुनाहों का **80 :** **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से और येह बात मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है क्यूं कि मोमिन का ह़ाल येह है कि जब उसे ने'मत मिलती है तो शुक्र गुज़ारी करता है और जब सख़्ती होती है तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहता है। **81 :** उस के साथ सुलूक और एह़सान करो **82 :** उन के ह़क़ दो सदक़ा दे कर और मेहमान नवाज़ी कर के। **मस्अला :** इस आयत से मह़ारिम के नफ़क़े का वुजूब साबित होता है। (مدارک) **83 :** और **अल्लाह** तआ़ला से सवाब के त़ालिब हैं। **84 :** लोगों का दस्तूर था कि वोह दोस्त अह़बाब और आश्नाओं को या और किसी शख़्स को इस निय्यत से हदिय्या देते थे कि वोह उन्हें इस से ज़ियादा देगा, येह जाइज़ तो है लेकिन इस पर सवाब न मिलेगा, इस में बरकत न होगी क्यूं कि येह अ़मल ख़ालिसन लिल्लाहि तआ़ला नहीं हुवा। **85 :** न इस से बदला लेना मक़्सूद हो न नामो नुमूद **86 :** उन का अज्रो सवाब ज़ियादा होगा, एक नेकी का दस गुना ज़ियादा दिया जाएगा। **87 :** पैदा करना, रोज़ी देना, मारना, जिलाना येह सब काम **अल्लाह** ही के हैं।

www.dawateislami.net

يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ ع ١٣ ٧

उन के शिर्क से चमकी ख़राबी ख़ुश्की और तरी में[90] उन बुराइयों से जो लोगों के हाथों ने कमाई

لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي

ताकि उन्हें उन के बा'ज़ कौतकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वोह बाज़ आएं[91] तुम फ़रमाओ ज़मीन

الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ

में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा अगलों का उन में बहुत

مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا

मुश्रिक थे[92] तो अपना मुंह सीधा कर इबादत के लिये[93] क़ब्ल इस के कि वोह दिन आए जिसे अल्लाह

مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ

की तरफ़ से टलना नहीं[94] उस दिन अलग फट जाएंगे[95] जो कुफ़्र करे उस के कुफ़्र का वबाल उसी पर और जो

عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

अच्छा काम करें वोह अपने ही लिये तय्यारी कर रहे हैं[96] ताकि सिला दे[97] उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ

काम किये अपने फ़ज़्ल से बेशक वोह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता और उस की निशानियों से है कि

يُّرْسِلَ الرِّيٰحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ

हवाएं भेजता है मुज़्दा सुनाती[98] और इस लिये कि तुम्हें अपनी रहमत का ज़ाएक़ा दे और इस लिये कि कश्ती[99] उस

بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

के हुक्म से चले और इस लिये कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो[100] और इस लिये कि तुम हक़ मानो[101] और बेशक हम ने तुम

88 : या'नी बुतों में जिन्हें तुम अल्लाह तआ़ला का शरीक ठहराते हो उन में **89 :** इस के जवाब से मुश्रिकीन आ़जिज़ हुए और उन्हें दम मारने की मजाल न हुई तो फ़रमाता है **90 :** शिर्क व मआ़सी के सबब से क़हत़ और इम्साके बारां (बारिश का रुक जाना) और क़िल्लते पैदावार और खेतियों की ख़राबी और तिजारतों के नुक़्सान और आदमियों और जानवरों में मौत और कस्रते आतश ज़दगी और ग़र्क़ और हर शै में बे बरकती **91 :** कुफ़्र व मआ़सी से और ताइब हों। **92 :** अपने शिर्क के बाइस हलाक किये गए, उन के मनाज़िल और मसाकिन वीरान पड़े हैं, उन्हें देख कर इ़ब्रत ह़ासिल करो। **93 :** या'नी दीने इस्लाम पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहो। **94 :** या'नी रोज़े क़ियामत। **95 :** या'नी ह़िसाब के बा'द मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे, जन्नती जन्नत की त़रफ़ जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की त़रफ़। **96 :** कि मनाज़िले जन्नत में राह़त व आराम पाएं **97 :** और सवाब अ़त़ा फ़रमाए अल्लाह तआ़ला **98 :** बारिश और कस्रते पैदावार का **99 :** दरिया में उन हवाओं से **100 :** या'नी दरियाई तिजारतों से कस्बे मआ़श करो **101 :** उन ने'मतों का और अल्लाह की तौह़ीद क़बूल करो।

www.dawateislami.net

مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ

से पहले कितने रसूल उन की क़ौम की तरफ़ भेजे तो वोह उन के पास खुली निशानियां लाए[102] फिर हम ने

الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ

मुजरिमों से बदला लिया[103] और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना[104] अल्लाह है कि

يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَ

भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आस्मान में जैसा चाहे[105] और

يَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ

उसे पारा पारा करता है[106] तो तू देखे कि उस के बीच में से मींह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है[107]

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ

अपने बन्दों में जिस की तरफ़ चाहे जभी वोह ख़ुशियां मनाते हैं अगर्चे उस के उतारने

يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿۴۹﴾ فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ

से पहले आस तोड़े हुए थे तो अल्लाह की रह़मत के असर देखो[108] क्यूंकर

يُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज़ करता) है उस के मरे पीछे[109] बेशक वोह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वोह सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾ وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ

कर सकता है और अगर हम कोई हवा भेजें[110] जिस से वोह खेती को ज़र्द देखें[111] तो ज़रूर इस के बा'द

يَكْفُرُوْنَ ﴿۵۱﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا

नाशुक्री करने लगें[112] इस लिये कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते[113] और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वोह पीठ

102 : जो उन रसूलों के सिद्क़े रिसालत पर दलीले वाज़ेह़ थीं तो उस क़ौम में से बा'ज़ ईमान लाए और बा'ज़ ने कुफ़्र किया। **103 :** कि दुन्या में उन्हें अ़ज़ाब कर के हलाक कर दिया। **104 :** या'नी उन्हें नजात देना और काफ़िरों को हलाक करना। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को आख़िरत की काम्याबी और आ'दा पर फ़त्ह़ो नुसरत की बिशारत दी गई है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : जो मुसल्मान अपने भाई की आबरू बचाएगा अल्लाह तआ़ला उसे रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग से बचाएगा। येह फ़रमा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई "كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ" **105 :** क़लील या कसीर **106 :** या'नी कभी तो अल्लाह तआ़ला अब्रे मुह़ीत भेज देता है जिस से आस्मान घिरा मा'लूम होता है और कभी मुतफ़र्रिक़ टुकड़े अ़लाह़दा अ़लाह़दा। **107 :** या'नी मींह को **108 :** या'नी बारिश के असर जो उस पर मुरत्तब होते हैं कि बारिश ज़मीन को सैराब करती है, उस से सब्ज़ा निकलता है, सब्ज़े से फल पैदा होते हैं, फलों में ग़िज़ाइय्यत होती है और इस से जानदारों के अज्साम के क़िवाम को मदद पहुंचती है और येह देखो कि अल्लाह तआ़ला येह सब्ज़े और फल पैदा कर के **109 :** और ख़ुश्क मैदान को सब्ज़ा ज़ार बना देता है, जिस की येह क़ुदरत है **110 :** ऐसी जो खेती और सब्ज़े के लिये मुज़िर हो **111 :** बा'द इस

www.dawateislami.net

مُدْبِرِیْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَاۤ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ

दे कर फिरें[114] और न तुम अन्धों को[115] उन की गुमराही से राह पर लाओ तुम तो उसी को सुनाते हो जो

یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۵۳﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ

हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वोह गरदन रखे हुए हैं अल्लाह है जिस ने तुम्हें इब्तिदा में कमज़ोर बनाया[116] फिर

جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَیْبَةً ؕ

तुम्हें ना तुवानी से ताक़त बख़्शी[117] फिर कुव्वत के बा'द[118] कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया

یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ ﴿۵۴﴾ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ

बनाता है जो चाहे[119] और वोही इल्म व कुदरत वाला है और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी

یُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَیْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا یُؤْفَكُوْنَ ﴿۵۵﴾

मुजरिम क़सम खाएंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी[120] वोह ऐसे ही औंधे जाते थे[121]

وَ قَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَ الْاِیْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى

और बोले वोह जिन को इल्म और ईमान मिला[122] बेशक तुम रहे अल्लाह के लिखे हुए में[123]

के कि वोह सर सब्ज़ो शादाब थी। **112 :** या'नी खेती ज़र्द होने के बा'द नाशुक्री करने लगें और पहली ने'मत से भी मुकर जाएं। मा'ना येह हैं कि उन लोगों की हालत येह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है रिज़्क़ मिलता है खुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है खेती ख़राब होती है तो पहली ने'मतों से भी मुकर जाते हैं। चाहिये तो येह था कि अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करते और जब ने'मत पहुंचती शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल होते। इस के बा'द अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाता है कि आप उन लोगों की महरूमी और उन के ईमान न लाने पर रन्जीदा न हों **113 :** या'नी जिन के दिल मर चुके और उन से किसी त़रह़ क़बूले ह़क़ की तवक़्क़ोअ़ नहीं रही। **114 :** या'नी ह़क़ के सुनने से बहरे हों और बहरे भी ऐसे कि पीठ दे कर फिर गए, उन से किसी त़रह़ समझने की उम्मीद नहीं। **115 :** यहां अन्धों से भी दिल के अन्धे मुराद हैं। इस आयत से बा'ज़ लोगों ने मुर्दों के न सुनने पर इस्तिद्लाल किया है, मगर येह इस्तिद्लाल सह़ीह़ नहीं क्यूं कि यहां मुर्दों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं जो दुन्यवी ज़िन्दगी तो रखते हैं मगर पन्दो मौइ़ज़त से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते, इस लिये उन्हें अम्वात से तश्बीह दी गई जो दारुल अ़मल से गुज़र गए और वोह पन्दो नसीह़त से मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते, लिहाज़ा आयत से मुर्दों के न सुनने पर सनद लाना दुरुस्त नहीं और ब कसरत अह़ादीस से मुर्दों का सुनना और अपनी क़ब्रों पर ज़ियारत के लिये आने वालों को पहचानना साबित है। **116 :** इस में इन्सान के अह़वाल की त़रफ़ इशारा है कि पहले वोह मां के पेट में जनीन था, फिर बच्चा हो कर पैदा हुवा, शीर ख़्वार रहा, येह अह़वाल निहायत ज़ो'फ़ के हैं। **117 :** या'नी बचपन के ज़ो'फ़ के बा'द जवानी की कुव्वत अ़त़ा फ़रमाई **118 :** या'नी जवानी की कुव्वत के बा'द **119 :** ज़ो'फ़ और कुव्वत और जवानी और बुढ़ापा येह सब अल्लाह के पैदा किये से हैं **120 :** या'नी आख़िरत को देख कर उस को दुन्या या क़ब्र में रहने की मुद्दत बहुत थोड़ी मा'लूम होगी, इस लिये वोह इस मुद्दत को एक घड़ी से ता'बीर करेंगे। **121 :** या'नी ऐसे ही दुन्या में ग़लत और बात़िल बातों पर जमते और ह़क़ से फिरते थे और बअ़्स का इन्कार करते थे जैसे कि अब क़ब्र या दुन्या में ठहरने की मुद्दत को क़सम खा कर एक घड़ी बता रहे हैं, उन की इस क़सम से अल्लाह तआ़ला उन्हें तमाम अहले महशर के सामने रुस्वा करेगा और सब देखेंगे कि ऐसे मज्मए़ आ़म में क़सम खा कर ऐसा सरीह़ झूट बोल रहे हैं। **122 :** या'नी अम्बिया और मलाएका और मोमिनीन इन का रद करेंगे और फ़रमाएंगे कि तुम झूट कहते हो **123 :** या'नी जो अल्लाह तआ़ला ने अपने साबिक़ इल्म में लौह़े महफ़ूज़ में लिखा उसी के मुत़ाबिक़ तुम क़ब्रों में रहे।

www.dawateislami.net

يَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۶﴾

उठने के दिन तक तो येह है वोह दिन उठने का[124] लेकिन तुम न जानते थे[125]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۵۷﴾

तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़्अ़ न देगी उन की मा'ज़िरत और न उन से कोई राज़ी करना मांगे[126]

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ

और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की मिसाल बयान फ़रमाई[127] और अगर तुम इन के पास कोई

بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿۵۸﴾ كَذٰلِكَ

निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर बातिल पर यूं ही

يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۹﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

मोहर कर देता है **अल्लाह** जाहिलों के दिलों पर[128] तो सब्र करो[129] बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है[130]

وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع ع ٦

और तुम्हें सबुक न कर दें वोह जो यक़ीन नहीं रखते[131]

اٰيَاتُهَا ٣٤ ﴿٣١﴾ سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ ٥٧ رُكُوْعَاتُهَا ٤

सूरए लुक़्मान मक्किय्या है, इस में चोंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾

येह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं हिदायत और रहमत हैं नेकों के लिये

124 : जिस के तुम दुन्या में मुन्किर थे **125 :** दुन्या में कि वोह हक़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा, अब तुम ने जाना कि वोह दिन आ गया और उस का आना हक़ था तो उस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़्अ़ न देगा जैसा कि **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : **126 :** या'नी न उन से येह कहा जाए कि तौबा कर के अपने रब को राज़ी करो जैसा कि दुन्या में उन से तौबा त़लब की जाती थी। **127 :** ताकि उन्हें तम्बीह हो और इन्ज़ार अपने कमाल को पहुंचे, लेकिन उन्हों ने अपनी सियाह बात़िनी और सख़्त दिली के बाइस कुछ भी फ़ाएदा न उठाया, बल्कि जब कोई आयते कुरआन आई उस को झुटला दिया और उस का इन्कार किया। **128 :** जिन्हें जानता है कि वोह गुमराही इख़्तियार करेंगे और हक़ वालों को बात़िल पर बताएंगे। **129 :** उन की ईज़ा व अ़दावत पर **130 :** आप की मदद फ़रमाने का और दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब करने का। **131 :** या'नी येह लोग जिन्हें आख़िरत का यक़ीन नहीं है और बअ़्स व हिसाब के मुन्किर हैं उन की शिद्दतें और उन के इन्कार और उन की ना लाइक़ हरकात आप के लिये तैश और क़लक़ (रन्जिश) का बाइस न हों और ऐसा न हो कि आप उन के हक़ में अ़ज़ाब की दुआ़ करने में जल्दी फ़रमाएं। **1 :** सूरए लुक़्मान मक्किय्या है सिवाए दो आयतों के जो ''وَلَوْ اَنَّ مَا فِی الْاَرْضِ'' से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में चार रुकूअ़, चोंतीस आयतें, पांच सो अड़तालीस कलिमे, दो हज़ार एक सो दस हर्फ़ हैं।

www.dawateislami.net